

प्रुनासीरा कृषिषा तोशमाना सुपिप्ला श्रोपधीः कर्तमस्मै *befriedigt sein* A V. 3, 17, 5. — Vgl. तोष.

तुष्, तुष्यति (cp. auch med.) Dhātup. 26, 75; erhält keinen Bindevocal इ Kār. 6 aus Siddh. K. zu P. 7, 2, 10. तुतोष; तोद्यति; तोष्टा; ऋतुषत् (BHATT. 13, 8); तोष्टुम्; तुष्ट (mit Präsensbed. Kār. zu P. 3, 2, 188); 1) *sich beruhigen, sich zufriedengeben, sich zufrieden fühlen, seine Freude haben*: श्रुत्वा गाथा जनापास्त्वं तुष्य द्रौपदि मा क्रुधः MBh. 3, 1109. पावतुष्यति स द्विजः R. 2, 32, 16. स्तुवतः स्तुयमानाश्च तुष्यति च रमति च MBh. 13, 1276. तुतोष च पयावच्च पूर्वा प्राप्य 2, 449. BHATT. 2, 13, 14, 112. तोष्टा च भरतः परम् 22, 14. प्राप्य यूनेन को राव्यं तत्रियस्तोष्टुमर्हति MBh. 4, 1562. तुष्ट *zufriedengestellt, befriedigt, zufrieden*: तेष्वेव त्रिषु तुष्टेषु M. 2, 228. कर्षपेद्वाष्पांस्तुष्टः 3, 233, 7, 209. Aṅg. 4, 19. R. 1, 1, 87. यदि तुष्टा (अस्ति) महर्देव 33, 16. Vid. 93. सर्वा एवापदस्तस्य यस्य तुष्टं न मानसम् Hit. I, 134. TATTVA. 39, 9, 11. Vid. 276. BHĀG. P. 2, 2, 1. Mit dem instr. der Sache: उपसृष्टासु देवतास्वनधिगच्छंस्तच्छिङ्गे देवतेन तुष्येत् ṢIKH. Cū. 1, 17, 5. यत्स्वकेन राजा तुष्येन्न परस्त्रेयु गृध्येत् MBh. 3, 225, 12, 6708. R. 3, 7, 29. Hit. III, 24. अत्रकाशेयु u. s. w. तुष्यति दत्तेन पितरः सदा M. 3, 207, 12, 37. MBh. 1, 424. रत्नैर्महार्कैस्तुतुषुर्न देवाः BHATT. 2, 72. तैस्तुष्यतु HARIV. 7263. RAḠ. 3, 62. RĀGA-TAR. 3, 443. तुष्यते BHĀG. P. 1, 5, 8. तुष्यते 3, 6, 33. भक्त्या च तुष्टास्मि तत्र ŚĀV. 1, 9, 3, 25. R. 1, 1, 83, 6, 6. Vid. 243. VET. 33, 17. प्रभावतुष्ट Vid. 334. यदा नातुध्यद्दयं ततः BHĀG. P. 1, 4, 26. Mit dem gen. der Person: एवं स्तुतस्तदा तेन — तुतोष तस्य नृपते मुनेः MBh. 1, 836, 1, 3018. यस्या हि तुष्यते भर्ता सा सती HARIV. 7764. स्वयंभूः क्रम्य तोद्यति BHATT. 16, 3. BHĀG. P. 7, 9, 8. तस्य तुष्टो ऽभवत् R. 6, 7, 9. PAÑKĀT. III, 134. VET. 11, 20. mit dem dat. der Person: तस्मै तुतोष च KATHĀS. 24, 193, 18, 202. mit dem instr. der Person: आसीच्च च मया तुष्टः MBh. 4, 291. आत्मन्येवात्मना तुष्टः BHĀG. 2, 55. mit dem loc. der Person: किमेदयमुदारणाभुकारिषु तुष्यताम् Vid. 133. भस्मीभवतु सा नारी यस्यां भर्ता न तुष्यति PAÑKĀT. III, 133, 134. Hit. I, 191. आत्मानि तुष्यति *ist mit sich selbst zufrieden oder ist in seinem Innern zufrieden* BHĀG. 6, 20. mit प्रति und vorang. acc.: तं प्रति तुतोष KATHĀS. 14, 38. — 2) *Jmd zufriedustellen, Jmd zu Gefallen sein*; mit dem acc.: सा पत्नी न तुतोष पतिं तदा MBh. 1, 4198. — caus. तोषयति *beschwichtigen, zufriedustellen, Jmd zu Gefallen sein*; mit dem acc. der Person und instr. der Sache: गर्भं माता मुधितं वृत्तणास्वयैर्नत्तं तुषयती (sic) बिभर्ति R.V. 10, 27, 16. अयत्पार्ये — तोषयामास शंकरम् MBh. 5, 7391. KATHĀS. 7, 53. पुत्रकामिणा मुनिना तोष्य रुद्रात्सुतो वृतः HARIV. 6164. तं तोषय — तपसा वरदं कृमम् MBh. 3, 9943. 2078. अयम्बकं तोष्य युद्धे 1, 160. मूल्येन तोषयेच्चैनम् M. 8, 144. तोषयैर्न महर्कैश्च रत्नैर्विधिर्नस्तथा R. 2, 32, 17. DAṢAK. in BENF. Chr. 191, 13. तोषयिष्ये च तं नृपम् MBh. 4, 25. गुत्रन्सम्यगतू तुषत् BHATT. 6, 69, 13, 87. नित्यं तेजरीयासमतोषयत् (पतिम्) BHĀG. P. 3, 23, 3. स्त्रियश्च कामेर्तुलैश्चिराय युद्धेशारोस्तोषयितासि MĀRK. P. 26, 37. पुंश्चलि तिष्ठेदानीं न वा भूयस्तोषयिष्यामि PAÑKĀT. 38, 3. pass.: यस्य तोष्यते ऽनन्यथा दृशा BHĀG. P. 3, 14, 16. आत्मानं तोषयत् *sich zufriedengeben*: यस्य यदेवविक्रितं स तेन सुखदुःखयोः । आत्मानं तोषय-देही 4, 8, 33. तोषयित *zufriedengestellt, befriedigt, erfreut*: युद्धे ऽस्मिंस्तोषयितो ऽहं भर्षं त्वया MBh. 3, 7326. R. 1, 44, 13. एवं वस्तोषयितोः ह्यसिः *zufrieden mit euch* BHĀG. P. 6, 4, 13. ते पितार्षर्मणानेन रामस्य R. 1, 28, 29, 33, 20, 63,

19, 63, 18. KATHĀS. 4, 22. रक्ष्यस्तुति° R. 1, 62, 26. ṢĀK. 160. — Vgl. तुष्, जोषम् (u. जोष), तूष्णीम्.

— उप caus. *zufriedenstellen*: धनेनोपतोष्योपचक्रे स आसुरः (विवाहः) ṂCV. GRH. 1, 6.

— परि *sich vollkommen zufriedengeben, — fühlen, sich sehr freuen*: देवी पर्यतुष्यत् BHĀG. P. 6, 18, 67. °हूर्वाङ्कुरैरपि संभृतया सपर्यया किल परम परितुष्यसि 5, 3, 6. भवतः कश्चिदात्मना । परितुष्यति शारीर आत्मा मानस एव वा 1, 3, 2. तथापि नात्मा परितुष्यते मे 5. व्यसनेषु च सर्वेषु पितेव भवति दुःखितः । उत्सवेषु च सर्वेषु पितेव परितुष्यति ॥ R. 2, 2, 33. अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या BHART. 2, 2. नेह — कश्चिद्विषिर्न परितुष्यति सद्गतस्य सुवृत्तेन R. 3, 1, 11. न ते ऽहं परितुष्यामि — यत् *ich bin mit dir nicht zufrieden* 3, 66, 23. परितुष्य *aus Freude* KATHĀS. 18, 79, 339. परितुष्ट *vollkommen befriedigt, — zufriedengestellt, vollkommen zufrieden, — froh* M. 4, 227. R. 2, 32, 57, 3, 14, 23. TATTVA. 39, 2. DEV. 13, 10. प्रणिपातेन तस्येन्द्रः परितुष्टो वरं ददौ MBh. 13, 569. (तपसा) तेनायं परितुष्टो ऽस्य ब्रह्म R. 1, 14, 39. व्यगिरं परितुष्टा वल्बालैस्त्वं डकूलैः BHART. 3, 54. अक्रुद्धो ऽपरितुष्टश्च JĀG. 3, 53. एषो ऽस्मि परितुष्टार्थः किं करोमि प्रशाधि माम् wohl so v. a. zu *Allem bereit* HARIV. 6313. — Vgl. परितोष. — caus. *Jmd vollkommen beschwichtigen, — zufriedustellen, Jmd überaus zu Gefallen sein*: अकारणाद्द्वेषेपरं हि यो भवेत्क्रथं नरस्तं परितोषयिष्यति PAÑKĀT. I, 313. परिचारेण महता गुरुं तं पर्यतोषयत् MBh. 14, 433, 3, 16741, 13, 820. BHĀG. P. 2, 9, 41. ताम् — चातुश्रुतिः पर्यतोषयत् PAÑKĀT. 38, 22. सा चातीव वल्लभानेकप्रकारं परितोष्यमाणापि न प्रसीदति 223, 6. परितोषित BHĀG. P. 9, 3, 22. KATHĀS. 20, 226. यत्नया रक्षिता गावस्तेनास्मि परितोषितः HARIV. 3974. R. 3, 40, 4. गुरुं परितोषितः 2, 83, 15. रावणं च रणे कृत्वा देवास्ते (= तव) परितोषिताः 6, 104, 28.

— प्र *Gefallen finden an*: प्रतुष्यति श्रोत्रसुखैरपद्यैः BHATT. 12, 83. — caus. *Jmd zufriedustellen*: रुद्रगीतेन हरिम् — प्रतोष्य BHĀG. P. 4, 30, 1. प्रतोषित 9, 24, 31.

— संप्र *sich zufrieden fühlen*: संप्रतुष्यति MBh. 12, 6283.

— सम् *sich beruhigen, sich zufrieden fühlen, seine Freude haben*: नाद्यापि संतुष्यसि (तुष्टे) BHART. 3, 4. मैत्रेया संतुष्यताम् (gen. pl.) 91. न नु कमलस्य मधुकरः संतुष्यति गन्धमात्रेण ṢĀK. Ch. 63, 12. संतुतोष च ब्रह्मर्षिस्तस्या वृत्तेन MBh. 13, 220. स्वर्गतो ऽपि यथा राजा संतुष्यति तथा कुरु R. GORR. 2, 79, 32. KATHĀS. 3, 13. संतुष्य *aus Freude* 12, 193, 25, 125. संतुष्ट *zufriedengestellt, befriedigt, zufrieden*: परमसंतुष्टैः सर्वदैवतैः R. 1, 1, 84. न विषयो न संतुष्टः 63, 20. BHĀG. 12, 14. आत्मन्येव च संतुष्टः 3, 17. संतुष्टो येन केनचित् 12, 19. यदृक्कालाभ° 4, 22. संतुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तत्रैव च M. 3, 60. R. 5, 19, 8, 1, 83, 5. Hit. I, 134, 133. Git. 12, 17. H. 133. सुसंतुष्टः कापुरुषः स्वल्पकेनापि तुष्यति PAÑKĀT. I, 31. दुःसंतुष्ट *missvergnügt* Hit. I, 22. — Vgl. संतोष. — caus. *Jmd zufriedustellen, zu Gefallen sein, erfreuen, beschenken*: यो वदेदिकृ सत्यानि गुरुं संतोषयेत् च MBh. 3, 13685. संपुत्र स्वगतनेर्नार्थं विधिवत्समतोषयत् 13, 136. MĀRK. P. 18, 20. तपःसंतोषितात् — भूतेशात् RĀGA-TAR. 1, 107. नृपतयो यत्नेन संतोषिताः BHART. 3, 5. प्रदानपूर्वं संतोष्य ताम् KATHĀS. 3, 56. भोजनविशेषैर्वायसं संतोष्य Hit. 23, 16. तुलाशिशुप्रदानेन संतोषितो PAÑKĀT. 101, 11. संतोष्य हारकेयूरकुण्डलैर्डोम्बमण्डलम् RĀGA-TAR. 3, 379. PAÑ-